

श्री पार्श्वजिन स्तवन

तुम से लागी लगन ले लो अपनी शरण
पारस प्यारा भेटो भेटोज्ज संकट उमारा
निशदिन तुमको जपूं पर से नेहा तज्जूं
ज्जवन सारा तेरे चरणों में भीते उमारा

अश्वसेन के राजदुलारे वामादेवी के सुत प्राण प्यारे
सबसे मुह को मोडा जग से नेहा तोडा संयम धारा भेटो १

ईन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये
आशा पूरो सदा दुःख नहि पावे कदा सेवक तारा भेटो २

जग के दुःख की तो परवा नहीं है स्वर्ग-सुख की भी याह नहीं है
छूटे जामन भरण ऐसा होवे यतन तारणहारा भेटो ३

लाभों भार तुम्हें शीश नमावूं जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं,
‘पंकज’ (हम सब) व्याकुल भया दर्शन बिन ये जिया

लागे जारा भेटो भेटोज्ज. ४